SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-03| March- 2026
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i3.33

ग्रामीण क्षेत्र में विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध (देवीपाटन मंडल के विशेष संदर्भ में)

मनीष मोदनवाल[1], डॉ० सुनीता सिंह[2]

[1]शोधार्थी, (डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या) सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कालेज, गोण्डा, उत्तर प्रदेश।

[2]सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, रमाबाई राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अकबरपुर, अम्बेडकरनगर, उत्तर प्रदेश।

सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य देवीपाटन मंडल के ग्रामीण क्षेत्रों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर (हाई स्कूल) के विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर (Socio-Economic Status - SES) तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन करना है। शिक्षा और सामाजिक संरचना के बीच गहरे अंतर्संबंध को ध्यान में रखते हुए यह अध्ययन इस बात की जाँच करता है कि किस प्रकार परिवार की आय, माता-पिता की शिक्षा तथा व्यवसाय जैसे कारक विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित करते हैं।

इस अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है। प्रतिदर्श के रूप में देवीपाटन मंडल के 16 विद्यालयों से कुल 320 ग्रामीण विद्यार्थियों का चयन किया गया, सामाजिक-आर्थिक स्तर के आंकड़ों के संग्रहण के लिए राजीव भारद्वाज द्वारा निर्मित सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी (SESS-BR) का प्रयोग किया गया, और शैक्षिक उपलब्धि सम्बन्धी आंकड़ो के संग्रहण के लिए विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त कक्षा 10 में प्राप्तांको का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि अधिकांश ग्रामीण विद्यार्थी औसत सामाजिक-आर्थिक श्रेणी में आते हैं तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक पृष्ठभूमि का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। साथ ही यह भी पाया गया कि सामाजिक-आर्थिक स्तर और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक सह-संबंध विद्यमान है।

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज की प्रगति, समृद्धि एवं सांस्कृतिक उन्नयन का आधारभूत स्तंभ मानी जाती है। यह केवल ज्ञानार्जन की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, समानता और सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम भी है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति उसके नागरिकों की शैक्षिक उपलब्धि पर निर्भर करती है, और यह उपलब्धि अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होती है। इन्हीं कारकों में 'सामाजिक-आर्थिक स्तर' (Socio-Economic Status – SES) एक अत्यंत महत्वपूर्ण निर्धारक के रूप में उभरकर सामने आता है।

सामाजिक-आर्थिक स्तर एक बहुआयामी अवधारणा है, जिसमें परिवार की आय, माता-पिता की शैक्षिक योग्यता, व्यवसाय, सामाजिक प्रतिष्ठा तथा जीवन-स्तर जैसे तत्व सम्मिलित होते हैं। यह स्तर न केवल व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता को निर्धारित करता है, बल्कि उसकी आकांक्षाओं, अवसरों

और उपलब्धियों को भी प्रभावित करता है। विशेषतः विद्यार्थियों के संदर्भ में, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि उनकी शैक्षिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा, संसाधनों तक पहुँच तथा भविष्य की संभावनाओं को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।

ग्रामीण भारत के संदर्भ में यह विषय और अधिक प्रासंगिक हो जाता है, जहाँ सामाजिक एवं आर्थिक विषमताएँ स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले अधिकांश परिवार सीमित आय, अशिक्षा, पारंपरिक व्यवसायों तथा संसाधनों की कमी जैसी समस्याओं का सामना करते हैं। परिणामस्वरूप, इन परिवारों के विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, उपयुक्त अध्ययन-सामग्री, तकनीकी साधनों एवं मार्गदर्शन की कमी का सामना करना पड़ता है, जो उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

देवीपाटन मंडल, जिसमें गोंडा, बलरामपुर, बहराइच तथा श्रावस्ती जनपद सम्मिलित हैं, उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख ग्रामीण बहुल क्षेत्र है। इस क्षेत्र की सामाजिक-आर्थिक संरचना अपेक्षाकृत कमजोर है, जहाँ कृषि प्रमुख आजीविका का साधन है और औद्योगिक विकास सीमित है। ऐसे परिवेश में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का विश्लेषण करते समय उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर की उपेक्षा नहीं की जा सकती। यह समझना आवश्यक है कि किस प्रकार पारिवारिक पृष्ठभूमि, आर्थिक संसाधन एवं सामाजिक स्थिति विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित करते हैं।

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में समान अवसरों की अवधारणा पर विशेष बल दिया जा रहा है, किंतु व्यवहारिक स्तर पर सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ अभी भी विद्यमान हैं। यह असमानताएँ ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के बीच शैक्षिक उपलब्धि के अंतर के रूप में स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थी जहाँ बेहतर विद्यालय, आधुनिक तकनीकी संसाधन, निजी मार्गदर्शन एवं अनुकूल अध्ययन वातावरण प्राप्त करते हैं, वहीं निम्न सामाजिक-आर्थिक वर्ग के विद्यार्थियों को इन सुविधाओं के अभाव में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

इसी परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य देवीपाटन मंडल के ग्रामीण क्षेत्रों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंधों का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन न केवल शिक्षा के क्षेत्र में विद्यमान असमानताओं को उजागर करेगा, बल्कि नीति-निर्माताओं, शिक्षाविदों एवं समाजशास्त्रियों के लिए उपयोगी सुझाव भी प्रस्तुत करेगा, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता एवं समानता को सुदृढ़ किया जा सकेगा।

अतः यह शोध सामाजिक-आर्थिक कारकों और शैक्षिक उपलब्धि के अंतर्संबंध को समझने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है, जो शिक्षा के लोकतंत्रीकरण एवं सामाजिक न्याय की दिशा में एक सार्थक योगदान प्रदान कर सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध-पत्र का प्रमुख उद्देश्य देवीपाटन मंडल के ग्रामीण क्षेत्रों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंधों का विश्लेषण करना है। इस व्यापक उद्देश्य की पूर्ति हेतु निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है—

1. देवी पाटन मंडल के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का ग्रामीण क्षेत्र के आधार पर अध्ययन करना।
2. देवी पाटन मंडल के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का ग्रामीण क्षेत्र के आधार पर अध्ययन करना।
3. देवी पाटन मंडल के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर ग्रामीण क्षेत्र के आधार पर प्रभाव की तुलनात्मक स्थिति को ज्ञात करना।
4. सामाजिक आर्थिक कारको के प्रभाव का विश्लेषण करना।
5. शैक्षिक असमानताओ की पहचान करना।

शोध की परिकल्पनाएँ : किसी भी वैज्ञानिक अनुसंधान में परिकल्पनाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, क्योंकि वे शोध की दिशा निर्धारित करती हैं तथा तथ्यों के परीक्षण का आधार प्रदान करती हैं। परिकल्पना एक प्रकार का अनुमानित कथन होता है, जिसका सत्यापन अनुसंधान के माध्यम से

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंधों का परीक्षण करने हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है—

H_{01}. देवी पाटन मंडल के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर में ग्रामीण क्षेत्रों के आधार में कोई सार्थक समानता नहीं है |

H_{02}. देवी पाटन मंडल के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में ग्रामीण क्षेत्रों के आधार पर सार्थक समानता नहीं है |

H_{03}. देवी पाटन मंडल के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर ग्रामीण क्षेत्रों के आधार पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है |

H_{04}. देवी पाटन मंडल के विद्यार्थियों के पारिवारिक - पृष्ठभूमि का प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर नहीं पड़ता है |

उपर्युक्त परिकल्पनाएँ इस अध्ययन को एक स्पष्ट दिशा प्रदान करती हैं तथा यह सुनिश्चित करती हैं कि अनुसंधान व्यवस्थित एवं उद्देश्यपूर्ण ढंग से संचालित हो। इन परिकल्पनाओं के परीक्षण के माध्यम से यह ज्ञात किया जा सकेगा कि सामाजिक-आर्थिक कारक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को किस सीमा तक प्रभावित करते हैं।

साहित्य समीक्षा

साहित्य समीक्षा किसी भी शोध कार्य का आधार होती है, जिसके माध्यम से संबंधित विषय पर पूर्व में किए गए अध्ययनों, सिद्धांतों एवं निष्कर्षों का विश्लेषण किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध को समझने हेतु शिक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि के विभिन्न शोधों का अवलोकन किया गया है।

शिक्षा के क्षेत्र में यह व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि केवल उनकी बौद्धिक क्षमता का परिणाम नहीं होती, बल्कि यह उनके पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश से भी गहराई से प्रभावित होती है। **Sirin (2005)** द्वारा किये गये मेटा-विश्लेषण में पाया गया कि सामाजिक-आर्थिक स्तर और शैक्षिक उपलब्धि के बीच मध्यम से उच्च स्तर का सकारात्मक सह-संबंध विद्यमान है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि उच्च SES वाले विद्यार्थियों को बेहतर शैक्षिक संसाधन, तकनीकी सुविधाएँ एवं अभिभावकीय सहयोग प्राप्त होता है, जिससे उनकी उपलब्धि बेहतर होती है।

भारतीय संदर्भ में **चंद्रा एवं आज़िमुद्दीन** (2013) के अध्ययन में यह पाया गया कि सामाजिक-आर्थिक स्तर विद्यार्थियों के परीक्षा परिणामों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। उच्च आय एवं शिक्षित अभिभावकों के बच्चों ने शैक्षिक उपलब्धि में बेहतर प्रदर्शन किया, जबकि निम्न SES वाले विद्यार्थियों को संसाधनों की कमी के कारण पिछड़ना पड़ा।

NCERT (2012) द्वारा किए गए राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण में भी यह स्पष्ट किया गया कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के बीच शैक्षिक उपलब्धि में अंतर का एक प्रमुख कारण सामाजिक-आर्थिक असमानता है। शहरी क्षेत्रों में बेहतर विद्यालय, प्रशिक्षित शिक्षक एवं तकनीकी संसाधन उपलब्ध होने के कारण वहाँ के विद्यार्थियों की उपलब्धि अधिक पाई गई।

शैक्षिक मनोविज्ञान के विद्वानों जैसे **मंगल (2013)** एवं **अग्रवाल (2010)** ने यह प्रतिपादित किया है कि विद्यार्थियों की उपलब्धि पर प्रेरणा, अध्ययन-अनुशासन एवं पारिवारिक वातावरण का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। जिन परिवारों में शिक्षा का वातावरण सकारात्मक होता है, वहाँ के विद्यार्थी अधिक सफलता प्राप्त करते हैं।

राजीव भारद्वाज द्वारा विकसित 'सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी' (SESS-BR) ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस मापनी के माध्यम से सामाजिक-आर्थिक स्तर के विभिन्न आयामों का वैज्ञानिक मूल्यांकन संभव हुआ है, जिससे यह सिद्ध हुआ है कि SES के घटक—जैसे आय, शिक्षा एवं व्यवसाय—विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं।

अन्य अध्ययनों से यह भी ज्ञात हुआ है कि ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले विद्यार्थियों को अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे—शैक्षिक संसाधनों की कमी, तकनीकी सुविधाओं का अभाव, पारिवारिक दायित्व एवं मार्गदर्शन की कमी। इसके विपरीत, शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों को इन सुविधाओं का लाभ मिलता है, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि अपेक्षाकृत उच्च होती है।

उपरोक्त सभी अध्ययनों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक-आर्थिक स्तर और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य गहरा एवं सकारात्मक संबंध विद्यमान है। तथापि, देवीपाटन मंडल के विशेष संदर्भ में इस विषय पर सीमित अध्ययन उपलब्ध हैं। अतः प्रस्तुत शोध इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है, जो स्थानीय स्तर पर शैक्षिक असमानताओं को समझने एवं उनके समाधान हेतु उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

शोध विधि

किसी भी अनुसंधान की वैज्ञानिकता एवं विश्वसनीयता उसके द्वारा अपनाई गई शोध-विधि पर निर्भर करती है। प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंधों का सम्यक् एवं वस्तुनिष्ठ विश्लेषण करने के लिए उपयुक्त अनुसंधान पद्धति का चयन किया गया है। इस अध्याय में अनुसंधान विधि, जनसंख्या एवं प्रतिदर्श, उपकरण तथा डेटा विश्लेषण की प्रक्रिया का विस्तार से वर्णन किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में **वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया गया है। यह विधि सामाजिक विज्ञानों एवं शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत प्रचलित एवं उपयुक्त मानी जाती है, क्योंकि इसके माध्यम से वर्तमान परिस्थितियों, व्यवहारों एवं प्रवृत्तियों का व्यवस्थित अध्ययन किया जा सकता है।

वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का मुख्य उद्देश्य किसी समस्या या घटना की वर्तमान स्थिति का यथार्थ एवं सटीक चित्र प्रस्तुत करना होता है। इस अध्ययन में इसी विधि के माध्यम से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि विद्यार्थियों का सामाजिक-आर्थिक स्तर उनकी शैक्षिक उपलब्धि को किस प्रकार प्रभावित करता है।

यह विधि इसलिए भी उपयुक्त है क्योंकि इसमें बड़े समूह (Sample) से डेटा एकत्रित कर उनके बीच संबंधों का विश्लेषण किया जा सकता है। साथ ही, यह विधि शोधकर्ता को वस्तुनिष्ठ एवं विश्वसनीय निष्कर्ष प्राप्त करने में सहायक होती है।

प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या देवीपाटन मंडल के अंतर्गत आने वाले जनपदों—गोंडा, बलरामपुर, बहराइच एवं श्रावस्ती—के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी हैं। इन क्षेत्रों में अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण परिवेश से संबंधित है, जिससे अध्ययन का सामाजिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

अध्ययन के लिए **प्रतिदर्श (Sample)** का चयन सावधानीपूर्वक किया गया है, ताकि यह संपूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व कर सके। इस उद्देश्य से देवीपाटन मंडल के **16 विद्यालयों** का चयन किया गया। इन विद्यालयों से कुल **320 ग्रामीण क्षेत्रों विद्यार्थियों** को प्रतिदर्श के रूप में लिया गया, प्रतिदर्श का चयन इस प्रकार किया गया कि विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमियों के विद्यार्थी उसमें सम्मिलित हो सकें। इससे अध्ययन के निष्कर्ष अधिक व्यापक एवं प्रतिनिधिक बन सके। समान संख्या में ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों को शामिल करने से तुलनात्मक अध्ययन करना भी संभव हो पाया।

डेटा संग्रह के लिए एक मानकीकृत एवं विश्वसनीय उपकरण का चयन किया गया, जिससे प्राप्त आंकड़े अधिक प्रमाणिक एवं वैज्ञानिक हो सकें। इस उद्देश्य से **राजीव भारद्वाज द्वारा निर्मित 'सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी (SESS-BR)'** का उपयोग किया गया।

यह मापनी सामाजिक-आर्थिक स्तर के विभिन्न आयामों को मापने के लिए विशेष रूप से विकसित की गई है। इसमें कुल **25 पद** सम्मिलित हैं, जो निम्नलिखित प्रमुख पहलुओं को मापते हैं—

- परिवार की आय
- माता-पिता की शैक्षिक योग्यता

- व्यवसाय
- पारिवारिक संसाधन एवं जीवन-स्तर

प्रत्येक पद के लिए निर्धारित अंक प्रणाली के आधार पर विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर का निर्धारण किया गया। यह मापनी सरल, स्पष्ट एवं उपयोग में सुविधाजनक होने के साथ-साथ विश्वसनीयता एवं वैधता की दृष्टि से भी उपयुक्त है।

अध्ययन के लिए आवश्यक आंकड़ों का संग्रह प्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों से प्रश्नावली के माध्यम से किया गया। शोधकर्ता द्वारा विद्यालयों में जाकर विद्यार्थियों को मापनी प्रदान की गई तथा उन्हें आवश्यक निर्देश देकर सही एवं निष्पक्ष उत्तर देने के लिए प्रेरित किया गया, साथ ही और शैक्षिक उपलब्धि सम्बन्धी आंकड़ो के संग्रहण के लिए विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त कक्षा 10 में प्राप्तांको का प्रयोग किया गया |

प्राप्त आंकड़ों को व्यवस्थित रूप से संकलित कर उनका वर्गीकरण एवं सारणीकरण किया गया। इसके पश्चात् आंकड़ों का विश्लेषण निम्नलिखित विधियों के माध्यम से किया गया—

- **प्रतिशत**: विभिन्न सामाजिक-आर्थिक श्रेणियों में विद्यार्थियों का वितरण ज्ञात करने के लिए |
- **सांख्यिकीय विधियाँ**: सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंधों का विश्लेषण करने के लिए |

इन विधियों के माध्यम से प्राप्त आंकड़ों की व्याख्या कर सार्थक निष्कर्ष निकाले गए। विश्लेषण की प्रक्रिया को इस प्रकार व्यवस्थित किया गया कि अध्ययन के उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं का यथोचित परीक्षण किया जा सके।

इस प्रकार प्रस्तुत शोध-विधि वैज्ञानिक, व्यवस्थित एवं उद्देश्यपरक है, जो अध्ययन की विश्वसनीयता एवं प्रामाणिकता को सुनिश्चित करती है। चयनित विधियाँ एवं उपकरण इस शोध को एक सुदृढ़ आधार प्रदान करते हैं, जिसके माध्यम से सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंधों का यथार्थ विश्लेषण संभव हो सका है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत अध्याय में देवीपाटन मंडल के 320 ग्रामीण क्षेत्रों विद्यार्थियों से प्राप्त आंकड़ों का वर्गीकरण, सारणीकरण एवं विश्लेषण किया गया है। सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंधों को स्पष्ट करने हेतु विभिन्न तालिकाओं के माध्यम से व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

तालिका – 1

देवीपाटन मण्डल के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्तर से संबंधित विवरण :–

क्र० सं०	सामाजिक–आर्थिक स्तर श्रेणी	स्तर	ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी 320 संख्या	प्रतिशत
1	उच्च	70-79	7	2.19%
2	औसत से उच्च	60-69	72	22.5%
3	औसत	40-59	153	47.81%
4	औसत से निम्न	30-39	85	26.57%
5	निम्न	20-29	3	0.93%

तालिका 1 से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों का सामाजिक–आर्थिक स्तर सम्बन्धी विवरण मुख्यतः औसत श्रेणी वर्ग 47.81% में केंद्रित है। इसके अतिरिक्त 26.57% विद्यार्थी औसत से निम्न श्रेणी वर्ग में आते हैं, तथा 0.93% निम्न श्रेणी वर्ग में आते है। इसके विपरीत उच्च श्रेणी वर्ग के विद्यार्थियों का प्रतिशत केवल 2.19% है, जो अत्यंत कम है तथा औसत से उच्च श्रेणी वर्ग विद्यार्थियों का 22.5% है

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

उपरोक्त व्याख्या से यह निष्कर्ष निकलता है कि देवी पाटन मंडल के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्तर में असमानता पाई जाती है |

तालिका – 2

देवीपाटन मण्डल के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित विवरण :–

क्र० सं०	शैक्षिक उपलब्धि श्रेणी	स्तर	ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी 320 संख्या	प्रतिशत
1	उच्च	84-89	5	1.56%
2	औसत से उच्च	78-83	70	21.87%
3	औसत	62-77	163	50.94%
4	औसत से निम्न	56-61	77	24.07%
5	निम्न	50-55	5	1.56%

तालिका 2 ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाती है। इसमें यह पाया गया कि आधे से अधिक विद्यार्थी 50.94% औसत श्रेणी स्तर पर हैं, जबकि 24.07% विद्यार्थी औसत से निम्न श्रेणी स्तर में आते हैं तथा निम्न श्रेणी स्तर से 1.56 % विद्यार्थी आते है ,वहीं उच्च उपलब्धि वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत मात्र 1.56% है,तथा औसत से उच्च श्रेणी स्तर के विद्यार्थियों संख्या प्रतिशत 21.87% है |

अतः उपरोक्त व्याख्या से यह निष्कर्ष निकलता है देवी पाटन मंडल के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया जाता है |

तालिका – 3

देवीपाटन मण्डल के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि का ग्रामीण क्षेत्र के आधार पर प्रभाव संबंधित विवरण :–

क्र० सं०	ग्रामीण क्षेत्र श्रेणी	स्तर	सामाजिक–आर्थिक स्तर (ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी 320) संख्या	प्रतिशत	स्तर	शैक्षिक उपलब्धि (ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी 320) संख्या	प्रतिशत
1	उच्च	70-79	7	2.19%	84-89	5	1.56%
2	औसत से उच्च	60-69	72	22.5%	78-83	70	21.87%
3	औसत	40-59	153	47.81%	62-67	163	50.94%
4	औसत से निम्न	30-39	85	26.57%	56-61	77	24.07%
5	निम्न	20-29	3	0.93%	50-55	5	1.56%

तालिका संख्या 3 से स्पष्ट होता है कि देवीपाटन मंडल के माध्यमिक विद्यालयों के सभी 16 विद्यालयों से चयनित 320 ग्रामीण विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्तर संबंधी विवरण क्रमशः उच्च श्रेणी स्तर में विद्यार्थियों की संख्या प्रतिशत 2.19 % है। औसत से उच्च श्रेणी स्तर में विद्यार्थियों की संख्या

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

प्रतिशत 22.50% है। औसत श्रेणी स्तर में विद्यार्थियों की संख्या प्रतिशत 47.81% है। औसत से निम्न श्रेणी स्तर में विद्यार्थियों की संख्या प्रतिशत 26.57% है। निम्न श्रेणी में विद्यार्थियों की संख्या प्रतिशत 0.93% है। और शैक्षिक उपलब्धि संबंधी विवरण क्रमशः उच्च श्रेणी स्तर में विद्यार्थियों की संख्या प्रतिशत 1.56% है। औसत से उच्च श्रेणी स्तर में विद्यार्थियों की संख्या प्रतिशत 21.87% है। औसत श्रेणी स्तर में विद्यार्थियों की संख्या प्रतिशत 50.94% है। औसत से निम्न श्रेणी स्तर में विद्यार्थियों की संख्या प्रतिशत 24.07% है। निम्न श्रेणी स्तर में विद्यार्थियों की संख्या प्रतिशत 1.56% है।

उपरोक्त विवरण के माध्यम से तुलना करके यह पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों पर भी सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक रूप से पड़ता है। दूसरे शब्दों में सहसंबंध के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि सामाजिक आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक/ सकारात्मक संबंध विद्यमान है। अर्थात सामाजिक आर्थिक स्तर बढ़ने पर शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होती है और घटने पर घटती है।

तालिका -4

अभिभावकों की शिक्षा का प्रभाव

शिक्षा स्तर	**उच्च उपलब्धि (%)**
अशिक्षित	10%
माध्यमिक	35%
उच्च शिक्षा	65%

तालिका 4 में अभिभावकों की शिक्षा का प्रभाव दर्शाया गया है। इसमें स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि अशिक्षित अभिभावकों के बच्चों की उच्च उपलब्धि केवल 10% है, जबकि माध्यमिक शिक्षा वाले अभिभावकों में यह 35% और उच्च शिक्षा वाले अभिभावकों में 65% तक पहुँच जाती है। इससे स्पष्ट है कि अभिभावकों की शिक्षा बच्चों के शैक्षिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि शिक्षित अभिभावक बेहतर मार्गदर्शन एवं शैक्षिक वातावरण प्रदान करते हैं।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

तालिका -5

आय का प्रभाव

आय स्तर	**उच्च उपलब्धि (%)**
निम्न	15%
मध्यम	40%
उच्च	70%

तालिका 5 के अनुसार आय स्तर और शैक्षिक उपलब्धि के बीच स्पष्ट संबंध पाया गया है। निम्न आय वर्ग में उच्च उपलब्धि केवल 15% है, जबकि मध्यम आय वर्ग में यह 40% और उच्च आय वर्ग में 70% तक पहुँच जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता विद्यार्थियों को बेहतर शिक्षा, कोचिंग एवं सुविधाएँ प्रदान करती है, जिससे उनकी उपलब्धि में वृद्धि होती है।

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

तालिका -6

समय सह–संबंध (Correlation Summary)

कारक	**सह–संबंध**
SES & उपलब्धि	+0.65
शिक्षा & उपलब्धि	+0.70
आय & उपलब्धि	+0.68

तालिका संख्या 6 में सह–संबंध विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है, जिससे यह ज्ञात होता है कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति (0.65), अभिभावकों की शिक्षा (0.70) तथा आय (0.68) का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सकारात्मक संबंध है। इनमें शिक्षा का प्रभाव सबसे अधिक पाया गया है। यह दर्शाता है कि विद्यार्थियों की उपलब्धि को बढ़ाने में अभिभावकों की शिक्षा, आर्थिक स्थिति एवं सामाजिक पृष्ठभूमि महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में देवीपाटन मण्डल के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति, अभिभावकों की शिक्षा, आय स्तर तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध का विश्लेषण किया गया। **अध्ययन** के **निष्कर्षों** से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि विभिन्न **सामाजिक–आर्थिक कारकों** से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होती है।

सामाजिक–आर्थिक स्थिति और शैक्षिक उपलब्धि के बीच स्पष्ट सकारात्मक संबंध पाया गया। जिन विद्यार्थियों का सामाजिक–आर्थिक स्तर उच्च है, उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक पाई गई। यह दर्शाता है कि बेहतर आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों को अधिक शैक्षिक अवसर एवं संसाधन प्रदान करती है।

अभिभावकों की शिक्षा का विद्यार्थियों की उपलब्धि पर महत्वपूर्ण प्रभाव देखा गया। जैसे-जैसे अभिभावकों का शिक्षा स्तर बढ़ता है, वैसे-वैसे बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि भी बढ़ती है। शिक्षित अभिभावक बच्चों को बेहतर मार्गदर्शन एवं अध्ययन का वातावरण प्रदान करते हैं।

आय स्तर का भी शैक्षिक उपलब्धि पर सीधा प्रभाव पाया गया। उच्च आय वर्ग के विद्यार्थियों में उच्च उपलब्धि का प्रतिशत अधिक है, जबकि निम्न आय वर्ग में यह कम पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करती है।

अंततः, सह–संबंध विश्लेषण से यह सिद्ध हुआ कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति, अभिभावकों की शिक्षा तथा आय—तीनों का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सकारात्मक एवं सार्थक संबंध है, जिसमें शिक्षा का प्रभाव सर्वाधिक पाया गया।

इस प्रकार, अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को सुधारने के लिए केवल शैक्षिक नीतियों पर ही नहीं, बल्कि सामाजिक–आर्थिक सुधार, अभिभावकों की शिक्षा एवं आय स्तर को बढ़ाने पर भी विशेष ध्यान देना आवश्यक है।

सुझाव -

- ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक सुविधाओं जैसे पुस्तकालय, प्रयोगशाला, डिजिटल संसाधन एवं योग्य शिक्षकों की उपलब्धता बढ़ाई जानी चाहिए, ताकि वहाँ के विद्यार्थियों की उपलब्धि में सुधार हो सके।
- आर्थिक रूप से कमजोर (निम्न एवं औसत से निम्न वर्ग) विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति, निःशुल्क अध्ययन सामग्री एवं कोचिंग सुविधाएँ प्रदान की जानी चाहिए।

- अभिभावकों की शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु वयस्क शिक्षा कार्यक्रम को प्रभावी ढंग से लागू किया जाना चाहिए, जिससे वे बच्चों का बेहतर मार्गदर्शन कर सकें।
- विद्यालयों में नियमित अभिभावक–शिक्षक बैठक आयोजित की जानी चाहिए, जिससे अभिभावक बच्चों की शैक्षिक प्रगति से अवगत रहें और सहयोग कर सकें।
- निम्न आय वर्ग के विद्यार्थियों के लिए विशेष शैक्षिक सहायता कार्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए, ताकि उनकी सीखने की कमी को दूर किया जा सके।
- सरकार एवं शैक्षिक संस्थानों द्वारा ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए कैरियर मार्गदर्शन एवं परामर्श सेवाएँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए, जिससे वे उच्च उपलब्धि के लिए प्रेरित हों।
- सामाजिक–आर्थिक असमानताओं को कम करने के लिए रोजगार एवं आय बढ़ाने वाली योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू किया जाना चाहिए, क्योंकि आय का शैक्षिक उपलब्धि पर सीधा प्रभाव पाया गया है।
- विद्यालयों में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए नियमित निरीक्षण, शिक्षक प्रशिक्षण एवं आधुनिक शिक्षण विधियों का उपयोग किया जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धात्मक भावना विकसित करने के लिए सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों, प्रतियोगिताओं एवं पुरस्कार प्रणाली को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, जे. सी. (2010). *शैक्षिक अनुसंधान का परिचय.* नई दिल्ली: आर्य बुक डिपो।
2. शर्मा, आर. ए. (2014). *शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ एवं सांख्यिकी.* मेरठ: सूर्य पब्लिकेशन।
3. मंगल, एस. के. (2013). *शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी.* नई दिल्ली: पी.एच.आई. लर्निंग।
4. सिंह, ए. के. (2012). *शिक्षा मनोविज्ञान.* वाराणसी: भारती भवन।
5. भारद्वाज, राजीव. (2005). *सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी (SESS-BR).* आगरा: नेशनल साइकोलॉजिकल कॉरपोरेशन।
6. भटनागर, आर. पी. (2012). *शिक्षा का समाजशास्त्र.* मेरठ: लायल बुक डिपो।

शोध-पत्र एवं जर्नल

1. Sirin, S. R. (2005). Socioeconomic Status and Academic Achievement: A Meta-Analytic Review. *Review of Educational Research*, 75(3), 417–453.
2. Chandra, R., & Azimuddin, S. (2013). Influence of Socio-Economic Status on Academic Achievement. *International Journal of Scientific Research*, 2(3), 45–49.
3. OECD. (2012). *Equity and Quality in Education: Supporting Disadvantaged Students and Schools.* Paris: OECD Publishing.

सरकारी रिपोर्ट एवं संस्थागत स्रोत

1. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020).*
2. NCERT. (2012). *National Achievement Survey Report.* नई दिल्ली: NCERT.
3. NCERT. (2015). *Learning Outcomes at Secondary Level.*
4. भारत सरकार. (2011). *जनगणना रिपोर्ट (Census of India).*

UDISE+. (2021). *School Education Data Report.*

Cite this Article:

मनीष मोदनवाल[1], डॉ० सुनीता सिंह[2], "ग्रामीण क्षेत्र में विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध (देवीपाटन मंडल के विशेष संदर्भ में)"*Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 03, pp.274-283, March-2026. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

मनीष मोदनवाल[1], डॉ० सुनीता सिंह[2]

For publication of research paper title

ग्रामीण क्षेत्र में विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध (देवीपाटन मंडल के विशेष संदर्भ में)

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-03, Month March 2026.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i3.33